अंतरा-शब्दशक्ति

लौट जा मन गाँव की ओर

संस्मरण

आरती तिवारी

लौट जा मन गाँव की ओर

(संस्मरण)

आरती तिवारी

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-40-7

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ ©आरती तिवारी

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Lout ja mann gaon ki or' by 'Arti Tiwari'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

"नदी के प्रवाह सी निर्मल सरल सहज रूप में जीवन को जीना अपनी राह स्वयं बना लेना निरंतर अग्रसर होते जाना यही जीवन है ।"

समर्पित

पूजनीय माता - पिता के श्री चरणों में

पिता - श्री हरि प्रसाद शुक्ला **माता-श्रीमती गिरजा शुक्ला**

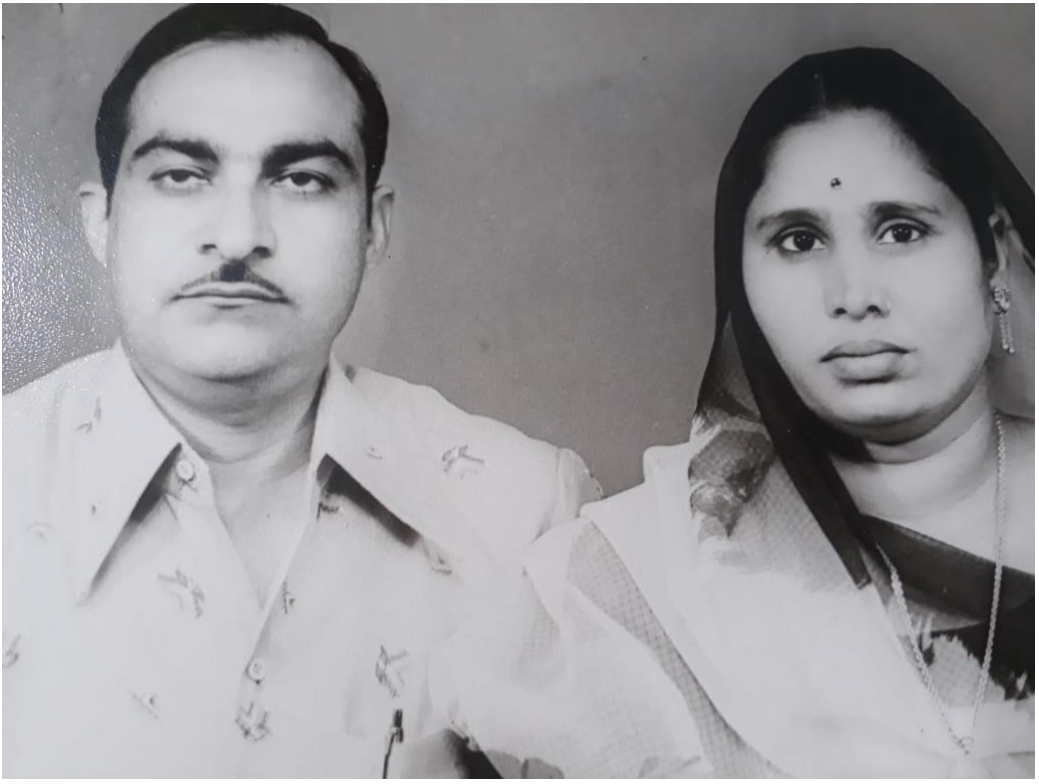

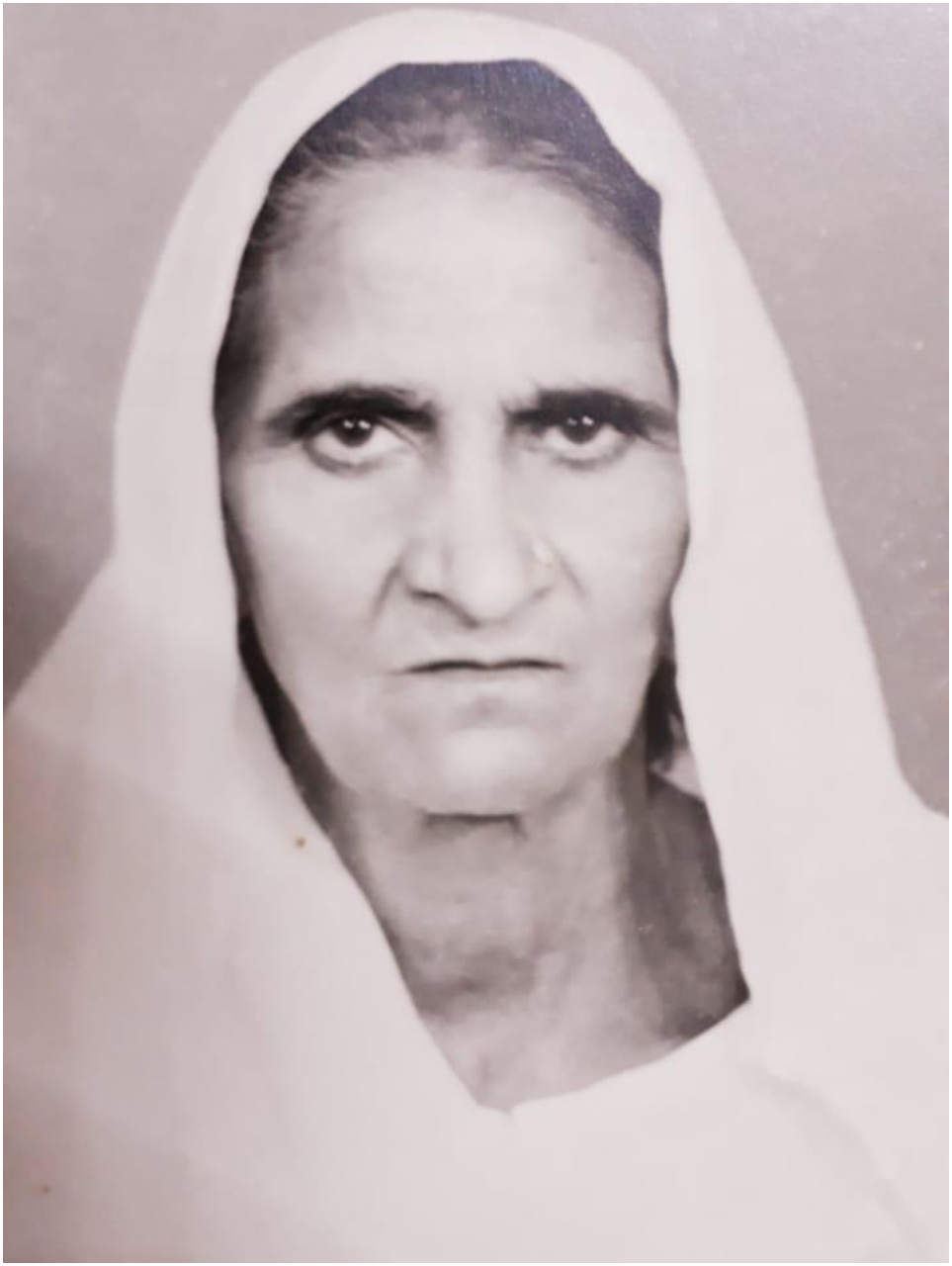

स्व. कबूतरा देवी

वुमन आवाज- स्त्री प्रकृति सृजनकर्ता की आवाज जिससे इस धरा का विस्तार हुआ

वुमन आवाज के इस अंक में प्रकाशित मेरा यह लेख एक एेसी सशक्त नारी के जीवन पर प्रकाश डालता है। जो हिम्मत संघर्ष दया से ओत- प्रोत उस काल समय की जीवंत मिसाल है । श्रीमती कबूतरा देवी जी मेरे मन में उनकी छवि सफेद सूती साड़ी में लिपटी चाँदी से चमकते केश पैर में हवाई चप्पल नाक में पान के आकार वाली सोने की कील चेहरे पर संतोष भरा तेज हल्की विनम्र मुस्कान धर्म से विज्ञान तक सभी क्षेत्र का ज्ञान रखने वाली शिक्षा को सर्वोपरि महत्व देती। मानवता उनका पहला कर्तव्य मजबूत इरादों वाली दृढ़ लगन व विश्वास से भरी चट्टान सी हिम्मत वाली बड़ी ही कर्मठ महिला जो अपने बच्चों के साथ-साथ अपने आस-पास व गाँव के लोगों को भी शिक्षित संस्कारवान अच्छा नागरिक बनाना चाहती थीं । मैं अपनी इस कृति के माध्यम से यादों के उस सुनहरे पल को दुहराना चाहती हूं जो परिवार ही नहीं अपितु अपने गाँव, समाज, देश के लिए मिसाल बन एक इतिहास रच जाते हैं । धरा पर सदियों तक हम उनको याद करते हैं , श्रद्घा से हमारा हृदय हमेशा नत्मस्तक होता है। ईश्वर के दिए हुए अमूल्य जीवन में माता-पिता परिवार , समाज सभी के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए 13 अक्टूबर 1974 दिन रविवार सायंकाल को उनका देहावसान हो गया पर हमारी स्मृतियों में सदा अमर हैं।

बचपन

"कमल सा खिलता, गुलाब के फूलों सा महकता हवाओं सा उड़ता, आसमान छूता, रेत सा फिसलता पीछे छूटता कभी न लौटकर आता बचपन।

आज से लगभग 110-120 वर्ष पूर्व की बात,...इलाहाबाद, जिला गाँव चौकी गंगा के पार एक घर श्री दामोदर पांडेय व मोती रानी देवी जी का है। मध्यम वर्गीय किसान परिवार खेती किसानी ही आय साधन है। घर परिवार सज्जन, संस्कारी व धार्मिक आचार विचार वाला, पठन पाठन का वातावरण भी है।

उनकी चार संतानों में सबसे बड़ी बिटिया कबूतरा देवी बचपन से ही होनहार, तेज बुद्धि वाली है उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई फिर आगे की पढ़ाई गाँव में ही पाठशाला से पूरी की । पढ़ाई में होशियार अपने समय में गणित के सूत्र, पहाड़े, विज्ञान, दोहा, श्लोक, मुंह जबानी याद होते। वह रामायण व गीता भी पढ़ा करतीं।

कबूतरा अपने नाम के अनुरूप पंछी की तरह उन्मुक्त, चंचल, जीवन की ऊँचाईयों को छूने वाली आसमान में अपना पंख पसार एक अलग अंदाज जीवन जीने वाली थी। वह बहुत ही

मिलनसार, शांत गंभीर स्वभाव वाली उत्साह से भरी हुई थीं, तैरना उनको बहुत पसंद था, वह एक कुशल तैराक भी थी, खेल-खेल में नदी के किनारे तक पहुंच जाया करती, नदी के किनारे सखियों के संग खेलना, रेत के घर बनाना, पानी से खेलना, पेड़ पर चढ़ना, बाग बगीचों में सैर करना, खेत में जाना घूमना टहलना प्रकृति के बीच नैसर्गिक रुप से जीवन को जीना अलमस्त बचपन बीता।

उस समय में प्रकृति में चारों हरियाली ही हरियाली होती जब सावन-भादों का महीना होता घनघोर घटायें छा जाती कभी -कभी तो बरखा रानी का बरसना चार-पाँच दिन तक न रूकता। ऐसे में मन का मयूर नाचने लगता, सावन का महीना आते ही त्यौहार शुरू गुड़िया (नागपंचमी) पर मेला लगता सखियों के संग इक्का में बैठकर मेला देखने जाना घूमना, गुड्डे-गुड़िया लेना, रंग बिरंगी चूड़ियाँ पहनना, टिकली (बिन्दी) बहुत खूबसूरत रंग बिरंगी बेहतरीन होती, होठलाली, पावडर, अफगान इस्नो क्रीम बहुत प्रचलित था । मिठाई -पेड़ा, गुड़ की. चोटहिया, जलेबी, अनरसा, बूंदी का लेडुआ, लाई, गट्टा, बड़े - बड़े बताशे, खाते घर के लिए भी लाते यही सब मनोरंजन हुआ करता। सावन में कजरी तीज पर नीम की डाल पर पटोहा (झूला) डाला जाता लड़कियां खूब पेंगे मार-मारकर झूला झूलतीं, गीत गातीं, खूब सज संवरकर नये नये कपड़े पहनती, सखियां आपस में हंसी ठिठोली करतीं। गुड़िया से खेलती तालाब पर जाती, भाई भी साथ जाता फिर वहीं पर गुड़िया पीटी जाती कजरी गीत गाती रंग बिरंगी लाल पीली हरी नीली चूड़ियाँ पहन फूलों का श्रंगार कर अपने को किसी राजकुमारी से कम न समझती ऐसा लगता मानो सब परी लोक से आई हों।

राधा रानी के रास मंडल सा उत्सव होता बारिश में चारों ओर हरियाली में लगता धरती ने धानी रंग की चुनरिया ओढ़ ली हो, मंद-मंद हवा का झोंका लगता सावन के गीत गा कर इनका साथ दे रही हों । इन सब आनंद उमंग के बीच बचपन कब पीछे छूटता चला गया पता ही न चला,... छोटी सी बिटिया रानी अब सयानी हो गई ।

विवाहोत्सव

"पीछे छूटा बचपन तरूणाई आई बिटिया रानी को देख,
बाबुल को हाथ पीले करने की सुध आई ।

पिता दामोदर पांडेय व माता मोती रानी देवी ने भी खूब सपने संजोये थे, अब बिटिया रानी के लिए वर की तलाश शुरू हुई, जौनपुर जिला सुजानगंज के पास गाँव नारीपुर के एक मध्यम उच्चवर्गीय शुक्ल परिवार में विवाह तय हुआ । विवाह की तैयारी शुरू हुई , गाँव में हर पाँच कोस की दूरी पर बोली बदल जाया करती है, थोड़ा बहुत रीति रिवाज भी

उस क्षेत्र में अवधि बोली बोली जाती है। अवध क्षेत्र मिलता जुलता रीति रिवाज भी उस समय विवाह एक घर में होता पर सारा का सारा गाँव तैयारी में लग जाता। आपसी प्रेम सौहार्द्र की भावना बहुतायत होती है। दोनों तरफ विवाह की तैयारी शुरू हो गई लड़के के यहाँ तिलक की तैयारी बहुत जोरशोर से होती बहुत बड़ा आयोजन होता पूरा गाँव देखने उमड़ पड़ता मानो मेला लगा हो। पूरे गाँव के लोग सज -संवरकर तिलकोत्स्व देखने आते । लड़की वालों के घर से सारा तिलक का सामान उस समय बहुत बड़े -बड़े थाल, परात में सुदंर-सुदंर वस्त्र, मिठाई कई प्रकार की, फल तरह-तरह के, मेवे से पूरा थाल भरा होता, फूल माला व तिलक का सारा सामान सजा होता। घर के आँगन में गाँव की महिलायें बैठकर मंगल गीत गाती, पंडित जी मन्त्रोउच्चारण के साथ तिलक की रस्म पूरी करवाते । फिर सभी भोजन की ओर जाते हैं, सुंदर-सुंदर पकवान दूर से ही सुगंध सब को अपनी ओर खींचती। पूड़ी, कचौड़ी, मालपुआ , फुलौरी , दहीबड़ा, बालू शाही, जलेबी, पेड़ा, इमरती, रस, ठंडाई, तरह-तरह के फल, मेवा, कटहल परवल, कुम्हड़ा, कुंदरू, यह सब उस समयानुसार होता । बहुत आनंद लेते सब को दक्षिणा देकर विदा किया जाता ।

आज गाँव-चौकी में दामोदर पांडेय के घर उनकी बिटिया की बारात आने वाली है नाते रिश्तेदार सात आठ दिन पहले से ही आने लगते । तैयारी पहले से ही होने लगती। गाँव में दस दिन पहले विवाह गीत होने लगते, तीन चार दिन पहले मंडप छाया जाता सारे मंगल काम उसी के नीचे किया जाता। नाईन आटे से सुंदर मंगल चौक बनाती बीच में हरे बॉक्स को गाड़ा जाता साथ ही खूबसूरत सुग्गा पीले रंग में रंगा लाल-गुलाबी रंग से-चित्रकारी बनी होती सभी रस्म उसी के नीचे की जाती। दुल्हन को हल्दी लगाना, कंगन बंधना, तेल चूमना, कलश गोठन, सिलमायन, चकरी, मूसल, देवता पूजन आदि |

उस समय के विवाहोत्सव बड़े ही भव्य व राजसी लगते । बारात तीन दिन, सात दिन, महीनों तक भी रूकती । हाथी, घोड़े, ऊंट बग्गी लाये जाते, गाने बजाने, नाचने , नौटंकी करने वाले, ढोल, ताशा, नगाड़ा, शहनाई , तुरूई अनेक तरह के बाजा बजाने वाले, अद्भुत नजारा मानो लोककला का संगम हो, एक ओर बरातियों का सत्कार मिठाई, पेड़ा, बालूशाही, लौकी की बरफी, लड्डू , ठंडाई, रस, आम का पना, शरबत फल आम, लीची, तरबूज, खरबूज, संतरा, केला, पपीता आदि |

बारात आई बारात आई पूरे गाँव के लोग देखने को आतुर हो उठते चारों ओर शोर मच रहा होता द्वार पर बारात लग रही उपर अटारी से दुल्हन -दुल्हे पर जौ, अक्षत, पान का बीड़ा फेकती सखियों में दुल्हे को देखने की आकुलता देखते बनती मानो होड़ लगी हो। सखियां एक दूसरे से हँसी-ठठोली करतीं, द्वार पर महिलायें मंगल गीत गा रही हैं।

द्वार चार लग रहा पूरा का पूरा गाँव देखने के लिए जुटा है, आटे से चौक पूरा गया है, महिलायें बैठकर मंगल गीत गा रही हैं, पंडित दूल्हे का तिलक कर, समधी मिलन हो रहा, अब विवाह की बैठक होने वाली है । दुल्हन पीली साड़ी पहने हुए, दुल्हा पीले रंग का जोड़ा जामा पहने हुए है । पंडित मंडप में मन्त्रोउच्चारण के साथ विवाह की रस्म करवा रहे । पांव पूजन, कन्यादान, विवाह के फेरे, उधर गाँव भर की महिलायें बैठकर मंगल गीत गा रही हैं । विवाह सम्पन्न होने पर दोनों पक्ष दुल्हा-दुल्हन को आशीष प्रदान कर रहे हैं । अब सभी को हबर के लिए जा रहे है, यहाँ पर घर की महिलायें सखियां भाभी, साली दुल्हे के संग हँसी मजाक करती हैं। दूसरी ओर बरातियों के लिए भोजन परोसा जा रहा, पास में बैठे हैं सामने पत्ल में पूड़ी, सोहारी, (कचौड़ी), कटहल की रसेदार, परवल, कुम्हड़ा, कुंदरू की तरकारी बिना नमक डाले भोजन बनता, पत्तल पर नमक परोसा जाता । पूड़ी की बात ही लाजवाब है। बड़ी-बड़ी मुलायम, अब ऐसी नहीं बनती । मीठा चीनी का बूरा, बुनिया, लौकी की बरफी दूध, दही, परोसने वाले बहुत प्रेम से खिलाकर,... भोजन इतना शुद्ध होता पेट भर जाय पर मन नहीं भरता ।

विदाई से पहले कलेवा (खिचड़ी खवाई) यहाँ दुल्हा उसके भाई, मित्र, होते हैं, दुल्हन की सखियां, भाभी, हँसी-ठिठोली करतीं उनको नेग भी देतीं। समधी भोजन करते समय महिलायें गीत गाती हैं । मंडप हिलाने की रस्म के बाद अब विदाई की तैयारी शुरू हुई।

विदाई

माता-पिता के लिए यह समय बहुत भारी होता है , इसी दिन का इंतजार भी और बिछुड़ने का दुख भी, अजब संयोग है | माता -पिता अपनी बिटिया को अपनी हैसियत से बढ़कर उपहार देते, उस समय के बर्तन भी राजसी होते बड़े -बड़े पीतल के थाल, परात, बटुआ, हंडा , गगरा, फूल, कांस के बर्तन थाली, लोटा, गिलास, कटोरी आदि, हस्तकला का बहुत महत्व होता। विवाह में दिया जाता, हाथ की पंखी, बेना, द्वार के लिए तोरण, भौंकी, मोनी, कुरुई (डलिया) बहुत अनूठा गुलदान शीशी के भीतर धागे से गेंद बना उसमें मोती डाल कर, प्लास्टिक की गुड़िया, सुग्गा, चिरई से सजावट करते उत्कृष्ट नमूना होता, झापी गुलाबी रंग के कागज अंदर लगा उसमें बड़े -बड़े बूंदी के लड्डू रंग बिरंगए होते, बताशा, खाजा आदि।

विदाई की घड़ी अब माहौल बदल गया, माता, पिता, काका, काकी, अइया, फुआ, जीजी, सखियां सभी की आँखों में झर -झर अश्रु की धार सब एक दूसरे को ढांढस बंधा रहे, शहनाई बज रही, विदाई गीत गाया जा रहा, कलेजे के टुकड़े को विदा करना कहाँ आसान होता है । गाँव, घर, आँगन आस- पड़ोस, सखियां मानो कलेजा बैठा जा रहा, गाय, बछड़ा,

नीम का पेड़, खेतों की पगडंडी, पीपल का पेड़ मन किस-किस की सुध करे, किस-किस को बिसरे। इसी के बीच आँख से आँसू बह रहे पर माता सबसे अनमोल संस्कार भी दे रही परिवार को एक सूत्र में सदा बाँधकर रखने का। पहले संयुक्त परिवार होता, बिटिया सबके गले लग कर भेंट कर बहुत रोती है,...पीछे से लोक गीत,...

जेतना पिपरे में पात बिटिया वोतना रोटी पोये जाउ,

जेतना कुअंना में पनिया वोतना पानी भरे जाउ,...

असवारी (डोली) द्वार पर सब परिवार के लोग, सखियां, भाभी, जीजी मिलकर उसमें बैठाते हैं। पाँच छः कहार असवारी उठाते फिर बड़ी जोर जोर से बिटिया रोती रोती सबको पराया कर ससुराल चली ।मुख घूंघट से ढ़का राह भर रोती जाती जोर जोर से -साथ में नाइ भेजते लोटा-लेजुरी (रस्सी) दी जाती पानी पिलाने के लिए बीच-बीच में कहार असवारी पेड़ की छाँव में रखकर सुस्ता (आराम) लेते। अब बरातियों को जल-पान कराया जा अनेकों प्रकार की मिठाई ,नमकीन, कचौड़ी गुलाब जामुन, ऑवला, बेल का मुरब्बा, रस, दूध, दही, मठा, खाँड आदि से बहुत सत्कार करते। बरातियों को बहुत आदर सम्मान देते, विदा के समय प्लास्टिक के फूल में गुलाब का इत्र डालकर नेग उपहार दक्षिणा देकर बड़ो के पाँव छूकर , छोटों को आशीष के साथ विदाई ।

ससुराल की दहलीज

बाबुल का आँगना छूटा, छूटी गाँव की गलियाँ ,

बचपन की सखियां छूटीं चल रे मनवा धीरे-धीरे,

आवत पिय की नगरिया,..

आज गाँव नारीपुर में सरजु दिन की हवेली पर बहुत रौनक लग रही है। भीड़-भाड़, चहल-पहल है, दुल्हन के स्वागत में पूरा गाँव जुटा है, बरातियों की वापसी की राह देख रहे है, इतने में गाँव के छोटे छोटे बच्चे दौड़ कर आते हैं, पीछे बाग तक असवारी आ गई है, तभी नाई संदेश लेकर आता । द्वार पर भीड़ लग रही, महिलायें गीत गाने लगती है।

नवा खपरैलवा छवाओ, नये घर दुलहिन आवत ,

कहवाँ से विहाये राजा दशरथ हो,

मिथिला नगरिया से आवइ सिया सुकुमारी,

आजु अपनी अजोधिया मा,..

हर तरफ खुशी की लहर दिख रही ,नववधू के आगमन पर घर पूरा शुक्लान, पूरा गाँव खुशियों से सराबोर हो रहा, गाँव के नामी व्यक्ति हैं, सम्पन्न परिवार के यहाँ विवाह

है,(बड़ी बखरी कही जाती) घर की बड़ी बहू आने वाली है मंगल चार गीत गाया जा रहा , दुलहन उतारने की तैयारी चल रही, आरती की थाली, द्वार परछन के लिए सूप, मूसल, लोढ़ा, आटे की टिकरी सब सजाकर सास एक-एक पल राह निहार रही, पूर्व में बड़ी उत्सुकता आस पास के गाँव वाले भी, अत्यधिक खुशियाँ चंहु ओर बिखरी दिख रही, मेवा, मखाना, बताशा पैसा लुटाये जा रहा है, ऐसा लग रहा मानो राजा दशरथ, मिथिला से राजा जनक की पुत्री से अपने पुत्र का विवाह रचाकर अपनी अयोध्या नगरी लौट रहे हैं, इतना हर्षोल्ला वातावरण चारों पूरे गाँव में छाया हुआ है ।

मेहमान, नाते-रिश्तेदार, घराती- बराती, नौकर-चाकर, नाई- धोबी, कुम्हार-लुहार, बढ़ई, सुनार, दोना पत्तल वाले, पूरा का पूरा गाँव खुशियों के रंग में रंगा है। दूसरी तरफ तरह तरह के पकवान मेहमानों के लिए बनाये जा रहे, पूड़ी, सोहारी, बड़ा, फुलौरी, सालन, कटहल, परवल,, भिंडी, कुम्हड़ा, आलू की तरकारी, बालूशाही, हलुआ, खीर, बखीर, बुनिया,चीनी, खॉड, आम का रस, पना, बहुत कुछ खाने के लिए सब पंगत में बैठे हैं। दस बारह आदमी दोनों तरफ भोजन परोस रहे हैं, बड़े आनंद के साथ भोजन किया जा रहा, सब बहुत आनंद ले रहे हैं ।

नववधु के आगमन से पूरा परिवार बहुत खुश है

सास-ससुर, देवर, ननद भरा पूरा परिवार है, घर का वातावरण बहुत सुखद है, पहले घर कच्ची मिट्टी के होते, सरजु दिन की हवेली बहुत बड़ी है, घर खपरैल से छाया हुआ, घर के दरवाजे बहुत खूबसूरत शीशम की लकड़ी के नक्काशीदार, हाथी-घोडा, मोर बने हैं, बीच बीच में पीतल के नक्काशीदार फूल जड़े हुए हैं, जो कि वास्तुकला का बेजोड़ नमूना प्रतीत होता है ।घर के झरोखों में नक्काशीदार झीरी कटी हैं, बेल बूटे, पत्ती, हाथी, घोड़ा, मोर, तोता, चिड़िया, देवी देवता बने हैं । पुरुषों के लिए अलग से दालान बनाया गया, घर के आगे बहुत सारे नीम के पेड़ लगे हुए हैं, उसी की घनी छाँव के नीचे सुबह-शाम की बैठक होती, बच्चे खेलते-कूदते मंद शीतल हवा बहती । गाँव के बड़े का सत्कार हैं, अनाज की पैदावार बहुत है, आम के कई बाग है, महुआ, कटहल, अमरूद, करौंदा, केला, पपीता, आंवला, इमली, नींबू के पेड़ सामने बगीचे में लगा हुआ है। घर में गाय, भैंस, बैल, बछड़े हैं, दूध दही सभी कुछ, अच्छा सम्पन्न परिवार है, कुँआ तालाब, बावड़ी, पौदरी, खेतों की सिंचाई के लिए पुरवट बैल से नांदा जाता, खाद ढोने के लिए गाड़ा होता, घोड़े के लिए एक घुड़साल बना है

नववधू कबूतरा के पति द्वारकाप्रसाद (परदेश) कराची में काम करते, आते-जाते रहते, इस बीच देवर ननद के विवाह हो जाते हैं उन सबका भी परिवार हो जाता, इनके भी बच्चे हो जाते हैं। घर के कामकाज, परिवार की जिम्मेदारी, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बीच

समय कब हवा के पंख लगा कर बहुत ही तेज गति से बढ़ता जा रहा था कुछ पता न चला सब कुछ बहुत सुखद चल रहा था।

करवट बदलती जिंदगी नये आयाम

"चुनौती इंसान के इरादों को फौलाद बना देती,
विपरीत परिस्थिति में जीवन को जीने की नई दिशा दिखलाती"

वक्त ने करवट बदली और कोई भी नहीं जानता काल के गाल में क्या छुपा था नियति को कुछ और ही मंजूर था। कबूतरा देवी के पति द्वारकाप्रसाद का असमय निधन हो गया ।

जीवन का दृश्य जो अब तक खुशियों के रंग से सराबोर था, वह अचानक बदल गया। बहुत कम समय मिल पाया, संभलने के लिये। घर-परिवार की जिम्मेदारी छोटे-छोटे चार बच्चे, छोटा बेटा लगभग दो साल का था। अब जो कल तक दुल्हन घर के अंदर तक सीमित थी, बड़ी बहू होने के नाते घर-परिवार, बच्चों की जिम्मेदारी के साथ अब बच्चों के लिए माता-पिता दोनों का दायित्व निभाना था।

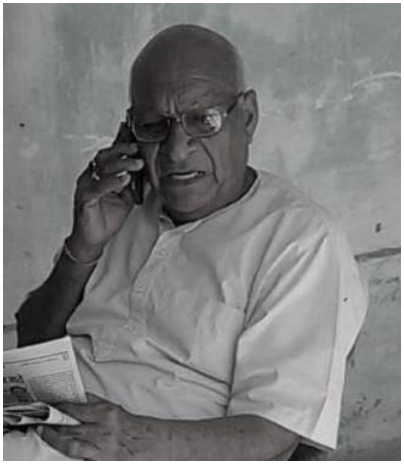

वह बड़ी दृढ़ लगन वाली, परिस्थितियों से न घबराने वाली, सोच-समझ का दायरा बहुत विकसित था, बहुत ही सुलझी हुई, जमीनी हकीकत से जुड़ी महिला।

अब बाहर से आय का साधन बंद हो गया। सम्पति सभी साझी थी, खेती ही आय का साधन, परिवार संयुक्त, अब बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित, शिक्षा को बहुत महत्त्व देतीं, उस समय गाँव में शिक्षा का बहुत विकास न था | पाठशाला बहुत दूर होती, बच्चे कोसों दूर पढ़ने पैदल ही जाते थे।

पहली पाठशाला घर ही होती है

बच्चों को वह संस्कार दिया । सभी बड़ों का आदर सम्मान करना। सूर्योदय से पूर्व उठना, खेतों पर जाना गाय-भैंस को चारा खिलाना , खेत की सिंचाई बोआई का काम देखना, दादा-दादी, चाचा-चाची, बुआ आदि बड़ों के नहाने के लिए कुएं से पानी भर देना, उनके कपड़े आदि धोना। बाग बगीचों की देख रेख, पानी देना, फलदार, छायादार पेड़-पौधे लगाना आदि।

उस समय में बहुत कम लोग गाँव में शिक्षित होते, उनका एक ध्येय था की बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर अफसर बने, परिवार, गाँव का नाम करें। अपने चारों बेटों को पढा़या, उच्च शिक्षा के लिए गाँव के बाहर भेजा ।

बड़े बेटे गणेश प्रसाद ने शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय (व्यापार) के क्षेत्र में दूसरे बेटे महेश प्रसाद ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर भिलाई इस्पात सयन्त्र में उच्च पद पर कार्यरत हुए । साथ ही चार विषय में एम.ए.भी किया ।बतीसरे बेटे सुरेश चंद्र को डॉक्टर बनाया। चौथे बेटे हरिप्रसाद ने शिक्षा प्राप्त कर प्रतियोगी परीक्षा में बैठे तीन नौकरियों उनका चयन हुआ, खाद्य विभाग को चुना और खाद्य अधिकारी बने। साथ ही अपने देवरों के बेटों को भी पढा़या।

उस समय में पैसे उनके पास न होते तो बाहर भेजने के लिए दिन-रात मेहनत करती, आटाचक्की नहीं होती,जांते से आटा पीसा जाता, चकरी से दाल दलती, अनाज पकने के बाद उसे मजदूर व परिवार के साथ मिलकर निदाई करवाना, मूसल से धान कूटना, पैसा न होता, वस्तु विनिमय की प्रथा थी, अनाज की पैदावार अच्छी होती उसी से पूरे परिवार का निर्वाह होता।

एक स्त्री के लिए यह सब कर पाना कोई आसान डगर न थी। पति न हो तो आज भी स्त्री के लिए अकेले जीवन आसान नहीं है, उस समय की क्या बात कहें?

वह संयुक्त परिवार को बहुत महत्व देती थीं, उनके दिये संस्कार और आदर्श पर चलते हुए आज भी यह परिवार पिछले पाँच पीढ़ियों से एक में ही है जो कि पूरे गाँव व समाज के लिए एक मिसाल है। शिक्षा की जागृति की जो अलख प्रज्वलित की, उसका प्रकाश दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है, गाँव के लेकर विदेश तक परिवार की उन्नति, क्षितिज की ऊँचाई तक पहुंचने की प्रेरणा उनसे ही मिली है व उनका अशीर्वाद है।

सामाजिक जीवन की यात्रा

"पीपल के पत्तों सी बहती, वटवृक्ष सी शीतल छांव देती ,
सीप में हो मोती जैसे जन-जन के हृदय में वास करती ।"

घर परिवार के दायित्व को बखूबी निभाते हुए गांव के लोगों के सुख -दुख में भी शामिल होतीं। मानव सेवा व जरूरतमंद लोगों की मदद में हमेशा तत्पर रहती थीं।

कहते हैं जहां प्रेम, पवित्रता ,सरलता, दया होती है वहां ईश्वर वास करते हैं । मेरी स्मृति में आज भी वह दिन याद आता घर के सामने नीम के पेड़ के नीचे बहुत भीड़ लगी रहती लोग दूर-दूर से आते । वह आंखों के लिए एक विशेष तरह का आजन बनाती व अपने हाथ से लोगों की आंखों में लगातीं, कैसी भी बीमारी होती वह ठीक हो जाती। गठिया रोग को ठीक करने के लिए जड़ी- बूटी से दवा तैयार करती बहुत से गठिया के मरीजों को ठीक किया।

यह सब वह नि:शुल्क किया करती थीं। गांव में पहले अस्पताल नहीं हुआ करते थे ऐसे में महिलाओं से संबंधित छोटी -बड़ी समस्याओं का समाधान भी करती थी। गर्भवती महिलाओं के बारे में उन्हें बहुत जानकारी थी। गर्भावस्था में अपना ध्यान कैसे रखना, क्या खाना, क्या नहीं खाना, जिससे होने वाला शिशु स्वस्थ रहे और गांव में जहां भी किसी महिला को प्रसव के समय कोई परेशानी होती वहां जातीं मदद के लिए और इस सब कार्य में गांव की आसपास की कुछ जानकार महिलाएं भी उनका साथ देती थी। गल्लू की माई, द्रौपदी, हीरावती, जयराजी, पड़ाइन, हुबराजी यह सभी उन सभी महिलाओं की मदद के लिए तैयार रहतीं, जच्चा और बच्चा दोनों का ध्यान रखतीं थी।

नवजात शिशु के लालन-पालन की जानकारी देती थीं, गांव ही नहीं अपितु आसपास के गांव वाले व दूर-दूर से भी लोग आते थे और भी कई छोटी-बड़ी स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं की जानकारी उन्हें थी उनका समाधान भी करतीं, घरेलू उपचार भी किया करतीं।

गांव में पशुओं के लिए अलग से कोई अस्पताल नहीं होता था । उनके बीमार होने पर घरेलू उपचार द्वारा उनका इलाज करतीं।पशुओं की बीमारी से संबंधित उन्हें बहुत जानकारी थी। गाय और भैंस के बच्चों के जन्म के समय वह उनकी देखभाल किया करतीं। कहा करती थी मूक जानवर हैं। यदि कहीं चोट लग जाए कट जाए तो फौरन हल्दी और सरसों का तेल गर्म करके उस जगह पर लगातीं। कैसे? कब ? क्या खिलाना है? किस चीज को खिलाने से जानवर ज्यादा दूध देते हैं? साथ ही गर्मी और सर्दी दोनों मौसम में उनका विशेष ध्यान रखा करतीं थी। उनकी सेवा भी वह मानव जैसे करतीं थी। गांव में किसी के जानवर को कोई तकलीफ होने पर इनके पास आते थे। यह दवाएं बताती और इन्हें लोग बुलाकर भी ले जाते थे।

गांव में जब लोग शिक्षा के महत्व को नहीं समझते थे, गांव में पाठशाला नहीं होती थी, पढ़ाई के लिए बच्चों को बहुत दूर जाना पड़ता था, साधन नहीं होता था, तब शिक्षा को

ही लक्ष्य बनाकर अपने बच्चों को उनके मुकाम तक पहुंचाया,पढ़ाया। आस -पड़ोस के बच्चों को भी पढ़ाई के लिए मदद करती थी। एक दो रुपए से भी मदद करतीं। गांव में पाठशाला बनाने के लिए भूमि भी दान दी जिससे बच्चों को दूर ना जाना पड़े, घर से थोड़ी ही दूर पर पाठशाला निर्मित है जिसका नाम जूनियर हाई स्कूल है। दया वह दान की भावना उनमें बहुत थी। परिवार में नाते रिश्तेदारी में पास-पड़ोस में गांव में जहां कहीं भी लड़के -लड़कियों का विवाह होता वह मदद अवश्य करतीं। अपने खेतों से उपजे अनाज भी जरूरतमंदों को देतीं। फल शाक-सब्जी सभी चीजों से मदद को तत्पर रहतीं। आम के मौसम में अपने बाग के आम पक जाने पर गांव वालों को आम खाने का न्योता देतीं। दूध, दही, मट्ठा, माखन यह सब भी वह आस -पड़ोस में जिनके घर गाय -भैंस ना होते और दूध पीने वाले छोटे बच्चे होते तो उन्हें दिया करतीं। गांव वाले बताते हैं कि यदि उनके पास पैसा न हो तो वह घर का सामान ही उठा कर दे देतीं, किसी को भी निराश न करती चाहे अनाज हो, बर्तन हो या अन्य वस्तु हो मदद अवश्य करतीं।

वह बहुत ही साहसी, निडर और ईमानदार महिला थीं। गांव में उस समय आवागमन का साधन बहुत नहीं होता था, लोग कोसों दूर पैदल ही जाया करते थे। गांव में लोग बताते हैं कि वह कोसों दूर पैदल ही चलकर लोगों की मदद के लिए जाती थीं। पहले वातावरण स्वच्छ, सुंदर और प्रकृति में चारों ओर हरियाली ही हरियाली होती इस कारण वर्षा भी बहुत होती थी, कभी-कभी बरसात हफ्तों तक लगातार होती रहती, तालाब , नहर, पोखरों में पानी भर जाया करता और बाढ़ भी आ जाती थी। कहीं आने जाने के लिए तैरकर जाना पड़ता था। एक बार की बात है कि वह अपने बच्चों के साथ नदी पार करके मायके चली गईं। इसी तरह जरूरत पड़ने पर सभी के लिए तैर कर भी पहुंच जातीं। पहले गांव में डकैत चिट्ठी भेज देते जहां डाका डालना होता, फिर डकैती करने जाते थे। गांव वाले बताते हैं कि कई बार वह अपनी युक्ति और बुद्धि से लोगों की जान माल की रक्षा करती थी। हिम्मती और बहादुर होने के साथ -साथ वह बहुत ही नेक महिला भी थीं।

धार्मिक जीवन का पथ

गंगा के नीर जैसी निर्मल, कृष्ण जैसा प्रेम जगत से,
आसमा को मुट्ठी में करती, गंगा पार की वह बिटिया,...

वह बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। धर्म के प्रति उनकी आस्था थी। सूर्योदय होने पर एक लाल उड़हुल का फूल जल में डालकर नित्य सूर्य को अर्ध्य दिया करतीं। रविवार का व्रत आजीवन किया। नवरात्रि का 9 दिनों का व्रत किया करतीं। 9 दिनों में भूमि पर ही सोया

करतीं। रामायण, गीता उन्हें मुंह जबानी याद थे।

उनकी नजर में धर्म का अर्थ मानव सेवा है। दीन -गरीब की सहायता करना, भूखे मनुष्य को भोजन कराना, तन ढकने के लिए वस्त्र देना और वृद्ध , विधवा स्त्री की सहायता करना। गंगा के तट पर माघ के महीने में 'कल्पवास' करने जातीं। वहां ठंड से ठिठुरते हुए लोगों के लिए गर्म कपड़े, शॉल, कंबल अपने बच्चों से मंगवा कर ले जातीं।उस समय में जब बहुत साधन नहीं थे तब कठिनाइयों को सहते हुए कुछ पैदल, कुछ इक्का गाड़ी या जो भी साधन मिलता उसी से आना-जाना करतीं। गांव की कुछ महिलाओं और परिवार के कुछ लोगों के साथ चार धाम की यात्रा भी उन्होंने की ।जहां भी जातीं किसी न किसी रूप में लोगों की मदद करतीं।

निश्चित रूप से यह उनके माता -पिता के द्वारा दिया गया संस्कार ही था। उन पर ईश्वर की विशेष कृपा थी। उनके हाथ में यश भी था और हाथ मदद के लिए तत्पर भी रहते थे।

पूर्णतया सत्य घटना

यह उस समय की बात है जबकि उनके पति श्री द्वारका प्रसाद इस दुनिया में नहीं थे, उनके जाने के लगभग 10 से 12 वर्ष के आसपास की बात है, एक रात सपने में उन्हें दिखता है कि देवी मां कह रही है मैं यहां नार(नाला) "मैं बह रही हूं आव ले ई चल।" दूसरे दिन वह वहां जाती है उनको कुछ नहीं मिलता। वह वापस चली आती हैं किंतु दूसरे दिन फिर वही सपना दिखता है गांव की बोली में फिर कहती हैं- "हम नारे में बही जात हई, तोनहन इतना सुख निंदिया सोवत हय, हम इहां गंदगी में बबूरे की डारी के नीचे नारे में पड़ी हुई, हमका लेई चल, गांव भरे क रक्षा करब, तोहरे लड़िकन के कुछ न होई देब।" बहती हुई नहर के पास दूसरे दिन वह गल्लू की माई को साथ में लेकर जाती हैं घुटनों तक पानी में उतर कर ढूंढते हुए उन्हें प्रतिमा उसी जगह पर मिल जाती है, उसे लेकर हर्ष पूर्वक घर लाती है और सभी को दिखाती हैं। तब से वहीं कुएं के पास नीम के पेड़ के नीचे उनका छोटा सा मंदिर उनके द्वारा बनवाया गया था।

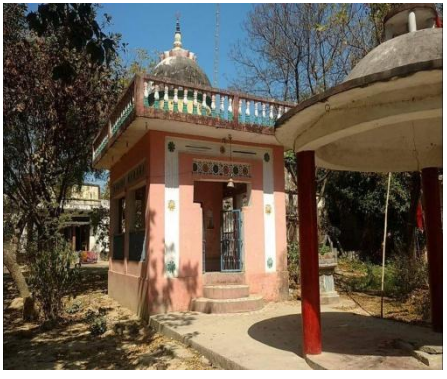

फिर बाद में आज से लगभग 15 से 16 वर्षों पूर्व उस मंदिर का जीर्णोद्वार उनके छोटे बेटे- बहू ने करवाया है। उस समय से आज तक पूरा गांव वहां पूजा करने आता है।

आसपास के गांव के लोग भी आते हैं। देवी माई सभी की मनोकामना पूर्ण करती हैं और ग्राम देवी के रूप में पूजी जातीं हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी वह मावा के नाम से सम्मानित हैं। समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता की मशाल आज जन-जन तक पहुंच गई है। गांव और उसके आसपास शिक्षा का विकास हो रहा है, गांव में आज कई घरों के बच्चे उच्च पदाधिकारी हैं।

पावन है वह भूमि यहां ऐसे संत जैसे व्यक्ति जन्म लेते हैं । गांव के लोगों की नजरों में वह एक लौह महिला थीं। ऐसे व्यक्ति की गांव समाज देश को देश के पूर्ण विकास के लिए सदा जरूरत है। आज भी उनके छोटे बेटे को अपने पैतृक गांव और वहां के लोगों से असीम प्रेम है। उनका कहना है -

"बचपन की बातें, बचपन की यादें ,

माई का आंचल सुख का सागर।"

वैसे तो वे अपने सभी बच्चों से बहुत प्रेम करतीं थीं किंतु उनका छोटा पुत्र अपनी मां से बहुत प्रेम करता है, उसने अपने पिता को नहीं देखा था उसके लिए तो उसकी मां और पिता दोनों ही वही थीं। साथ ही वह अपने परिवार के सदस्यों से अत्यधिक प्रेम करते हैं, सभी का मान भी करते हैं। गांव और परिवार को सर्वोपरि मानते हैं। शहर में रहते हुए भी उनके मन में एक गांव बसा रहता है। वहां की हरियाली, खेत- खलिहान, सई नदी, पाठशाला, नगरबाजार बालसखा, घर-द्वार, गौरी-शंकर, सबेली का धनुयज्ञ, कारूवीर, चौकीयान, नगर का गुथपाक, सुजानगंज का एटम बम (एक मिठाई) गट्टा, खाड़, जलेबी, लाल दूध, दही, चना-चबेना, सतुआ आदि, उनकी यादें उनके शरीर में आत्मा की तरह बसी हैं।

गांव नारीपुर में उनकी प्रतिमा स्थापना द्वारा संदेश- वह दया प्रेम,पवित्रता, सरलता, मानवता के लिए जनमानस में सदा- सदा के लिए जीवंत हैं। यह प्रतिमा उनके पुत्र श्री हरिप्रसाद शुक्ल द्वारा मां के श्री चरणों में समर्पित है। जो एक मां, मानवता और मातृभूमि के प्रति निष्ठा व समर्पण को दर्शाता है।

कितनी बातें कितनी यादें, क्या क्या तुमको बतलाऊं,

अंत न होता यादों का यह सागर ,मन डूबता ही डूबता जाए ,

लौट जा मन गांव की ओर, लौट जा मन गांव की ओर।।

उस समय, काल के परिपेक्ष्य में आज मैं अपने उन सारे सुनहरे अनुभवों को अपने पाठकों के माध्यम से साझा करना चाहती हूं जिससे प्रेरणा कि यह मशाल जलती रहे।

****

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - आरती तिवारी
जन्म - 15 जनवरी 1966, जिला - जौनपुर (उ.प्र.)
माता - श्रीमती गिरजा शुक्ला
पिता - श्री हरिप्रसाद शुक्ला
पति - श्री राजेन्द्र नाथ तिवारी
शिक्षा - एम.ए. (समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र), बी.एड़
एल.एल.बी., एन.डी.डी.वाई.।
मो. - 9310015517
ई मेल - artitiwari1966@gmail.com
कार्यक्षेत्र - लेखन
विधा - कविता, कहानी, लेख आदि।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-40-7
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com